आदर्श संस्कृत गाँव

चर्चा में क्यों?

उत्तराखंड सरकार ने राज्य की दूसरी भाषा **संस्कृत के संरक्षण और संवर्द्धन** के लिये अपने 13 ज़िलों में से प्रत्येक में एक गाँव को **'आदर्श संस्कृत गाँव'** के रूप में नामित किया है।

मुख्य बिंदु

- **संस्कृत को बढ़ावा देने के लिये सरकार की प्रतिबद्धता:**
  - राज्य के शिक्षामंत्री ने [संस्कृत को 'देववाणी' (देवताओं की भाषा) बताते हुए]() इस बात पर ज़ोर दिया कि संस्कृत का संरक्षण और संवर्द्धन सरकार की **सर्वोच्च प्राथमिकता है।**
  - उन्होंने कहा कि **आदर्श संस्कृत गाँव** नई पीढ़ी को संस्कृत के माध्यम से [भारतीय दर्शन]() **और ज्ञान परंपराओं से जोड़ने में मदद करेंगे।**
- **दैनिक जीवन में संस्कृत का एकीकरण:**
  - सरकार ने ग्रामीणों को दैनिक जीवन में **संस्कृत में बातचीत करने का प्रशिक्षण देने के लिये विशेष प्रशिक्षकों की नियुक्ति की है।**
  - **ग्रामीणों को धार्मिक अनुष्ठानों के दौरान** [वेदों, पुराणों और उपनिषदों]() **की श्लोकों को सुनाने** के लिये प्रोत्साहित किया जाएगा।
  - महिलाओं और बच्चों को **त्योहारों और समारोहों के दौरान संस्कृत में धार्मिक गीत गाने के लिये प्रेरित किया जाएगा।**
  - **अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के** बच्चों को संस्कृत पढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया जाएगा, जिसका उद्देश्य समाज के विभिन्न वर्गों के बीच सद्भाव को बढ़ावा देना है।
- **आदर्श संस्कृत गाँवों की सूची:**
  - सरकार ने उत्तराखंड के विभिन्न जिलों में **13 गाँवों को आदर्श संस्कृत गाँव के रूप में नामित किया है** :
    - **गढ़वाल क्षेत्र:** नूरपुर पंजनहेड़ी (हरिद्वार), भोगपुर (देहरादून), कोटगाँव (उत्तरकाशी), डिम्मर (चमोली), गोदा (पौड़ी), बैजी (रुद्रप्रयाग), मुखेम (टिहरी)।
    - **कुमाऊँ क्षेत्र:** पांडे (नैनीताल), जैंती (अल्मोड़ा), खर्ककार्की (चंपावत), उर्ग (पिथौरागढ़), शेरी (बागेश्वर), नगला तराई (उधमसिंह नगर)।
- **उत्तराखंड में संस्कृत शिक्षा:**
  - राज्य में **100 से अधिक संस्कृत माध्यमिक विद्यालय हैं,** जो भाषा को बढ़ावा देने के प्रयासों को और मज़बूत करते हैं।

संस्कृत

- यह एक **प्राचीन भारतीय-आर्य भाषा है** जिसमें **सबसे प्राचीन दस्तावेज़, वेदों** की रचना की गई है जिसे **वैदिक संस्कृत कहा जाता है।**
- **शास्त्रीय संस्कृत,** जो उस समय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिम में प्रयुक्त होने वाली उत्तर वैदिक भाषा के करीब थी, को अब तक रचित **सबसे उत्कृष्ट व्याकरणों में से एक,** [अष्टाध्यायी]() ("आठ अध्याय") में सुंदर ढंग से वर्णित किया गया है, जिसकी रचना [पाणिनि]() **ने की थी** (लगभग 6वीं-5वीं शताब्दी ई.पू.)।

  संस्कृत को [देवनागरी लिपि]() **के अलावा विभिन्न क्षेत्रीय लिपियों में** भी लिखा गया है, जैसे उत्तर में शारदा (कश्मीर), पूर्व में बांग्ला (बंगाली), पश्चिम में गुजराती और विभिन्न दक्षिणी लिपियाँ, जिनमें **ग्रंथ वर्णमाला भी शामिल** है, जिसे विशेष रूप से संस्कृत ग्रंथों के लिये तैयार किया गया था।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/model-sanskrit-village-1